बजरंग दल पर प्रतिबंध, विनाशकाले विपरीत बुद्धि : बोधराज सीकरी

छोटीबड़ीबात

आज ही के दिन 2004 में चीन ने सेविएन को भारत का अंग माना था।

क्यूआर कोड स्कैन कर पहुंचें दैनिक भास्कर पर

dainikbhaskarup.com

दैनिक भास्कर

देश का विश्वसनीय अखबार

झांसी, नोएडा, लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित

बजरंग दल पर प्रतिबंध को लेकर बोधराज सीकरी का कांग्रेस पर निशाना

बोले कर्नाटक में कांग्रेस की विनाश काले विपरीत बुद्धि

भास्कर ब्यूरो

गुरुग्राम। कर्नाटक चुनाव में कांग्रेस द्वारा बजरंगदल पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा को लेकर गुरुग्राम भाजपा नेता व जानेमाने समाजसेवी बोधराज सीकरी ने कांग्रेस पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। 45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15% लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर।

एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहाँ उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना है ? श्री सीकरी ने कहा कि इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ. आई. से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

उत्तर भारत का सम्पूर्ण समाचारपत्र

ऑनलाइन संस्करण
www.dainiktribuneonline.com

दैनिक ट्रिब्यून

बजरंग दल पर प्रतिबंध, विनाशकाले विपरीत बुद्धि : बोध राज सीकरी

गुरुग्राम, 5 अप्रैल (हप्र)

कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ़.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलंत उदाहरण है। भाजपा नेता और हरियाणा सीएसआर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष बोधराज सीकरी ने आज यह बात कही और कहा कि एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। 45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15% लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था

रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहाँ उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या ख़तरा है। यह क्या विडम्बना है? उन्होंने कहा कि इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पीएफ़आई से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पीएफ़आई कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

राष्ट्रीय
सहारा
राष्ट्रीयता ■ कर्त्तव्य ■ समर्पण

धर्मांतरण व घुसपैठियों को रोकता है बजरंग दल : बोधराज

गुरुग्राम (एसएनबी)। हरियाणा सीएसआर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष बोधराज सीकरी ने कहा कि कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पीएफआई से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलंत उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97 प्रतिशत हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। सीकरी ने कहा कि 45 प्रतिशत लोग शिव जी को इष्ट मानते है, जहां एक ओर 15 प्रतिशत लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त है, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35 प्रतिशत अनुयायी है।

राष्ट्रीय दैनिक ई-पेपर

भारत सारथी

बजरंग दल पर प्रतिबंध-कर्नाटक की सियासी जंग, विनाश काले विपरीत बुद्धि : बोध राज सीकरी

भारत सारथी

गुरुग्राम। कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेंसी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। 45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15% लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक और छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहाँ उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना है? इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ. आई. से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अयोध्या में हुई थी जिसका काम शोभायात्रा की रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए विश्व हिंदू परिषद ने उनको कई और उत्तरदायित्व दिए। बजरंग दल धर्मांतरण को रोकता है और घुसपैठियों को रोकता है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभनीय कार्य है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। आओ, स्वार्थी तत्वों को कर्नाटक के चुनाव में मजा चखाएँ और हार का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए। बोधराज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहां अगर कोई पार्टी बजरंबली के नाम से घृणा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।

Email : thedailymewat@yahoo.co.in

दैनिक मेवात

बजरंग दल पर प्रतिबंध - कर्नाटक की सियासी जंग

विनाश काले विपरीत बुद्धि : बोध राज सीकरी

- दैनिक मेवात संवाददाता

गुरुग्राम। कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलंत उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेंसी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिसमें यह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। 45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, वहां एक ओर 15% लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगेश्वर श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और राम को [illegible] पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ताओं को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बजरंगबली पर विश्वास करते हैं और इस बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहां उन्हें बजरंग दल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना है? इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ. आई. से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहां पी.एफ.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अयोध्या में हुई थी जिसका काम शोभायात्रा की रक्षा के लिए था। बाद में उसकी आस्था को देखते हुए विश्व हिंदू परिषद ने उनको कई और उत्तरदायित्व दिए। बजरंग दल धर्मांतरण को रोकता है और [illegible] को रोकता है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभनीय कार्य है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे। इस समय एक अनुमान के अनुसार 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं उनके लिए यह चुनौती है। अब भी, स्वार्थी तत्वों को कर्नाटक के चुनाव में मजा चखाएँ और इस का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए। बोधराज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहां अगर कोई पार्टी बजरंगबली के नाम से घृणा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है ऐसी सोच को हम [illegible] में मिटा सकते है।

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
ह्यूमन इंडिया
हम बनेंगे आपकी आवाज

बजरंग दल पर प्रतिबंध-कर्नाटक की सियासी जंग, विनाश काले विपरीत बुद्धि : बोध राज सीकरी

ह्यूमन इंडिया/ब्यूरो

गुरुग्राम। कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। 45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15% लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूप माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से हैं, वहीं उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना है? इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ.आई. से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अयोध्या में हुई थी जिसका कार्य शोभायात्रा की रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए विश्व हिंदू परिषद ने उनको कई और उत्तरदायित्व दिए। बजरंग दल धर्मांतरण को रोकता है और घुसपैठियों को रोकता है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभनीय कार्य है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। आओ, स्वार्थी तत्वों को कर्नाटक के चुनाव में धूल चटाएँ और हार का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए। बोधराज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहां अगर कोई पार्टी बजरंगबली के नाम से घृणा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच की हम कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।

www.gurgaontoday.in

गुड़गांव टुडे

बजरंग दल पर प्रतिबंध-कर्नाटक की सियासी जंग

विनाश काले विपरीत बुद्धि : बोध राज सीकरी।

गुड़गांव टुडे, गुरुग्राम

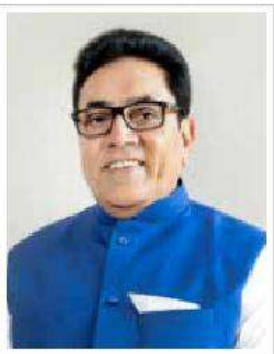

कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97 प्रतिशत हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। 45 प्रतिशत लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15 प्रतिशत लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35 प्रतिशत अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहाँ उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना है?

इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ. आई. से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अयोध्या में हुई थी जिसका काम शोभायात्रा की रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए विश्व हिंदू परिषद ने उनको कई और उत्तरदायित्व दिए। बजरंग दल धर्मांतरण को रोकता है और घुसपैठियों को रोकता है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभनीय कार्य है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। आओ, स्वार्थी तत्वों को कर्नाटक के चुनाव में मजा चखाएँ और हार का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए।

बोधराज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहां अगर कोई पार्टी बजरंबली के नाम से घृणा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

RNI No.DELHIN/2015/66886

ओपन सर्च

बजरंग दल पर प्रतिबंध,कर्नाटक की सियासी जंग

विनाश काले विपरीत बुद्धि : बोध राज सीकरी

ओपन सर्च/ विशेष संवाददाता
सतबीर भारद्वाज

गुरुग्राम। कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ़.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। 45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15% लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से हैं, वहाँ उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या ख़तरा है। यह क्या विडम्बना है?

इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ़. आई. से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ़.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अयोध्या में हुई थी जिसका काम शोभायात्रा की रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए विश्व हिंदू परिषद ने उनको कई और उत्तरदायित्व दिए। बजरंग दल धर्मांतरण को रोकता है और घुसपैठियों को रोकता है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभनीय कार्य है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। आओ, स्वार्थी तत्वों को कर्नाटक के चुनाव में मज़ा चखाएँ और हार का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए।

बोधराज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहां अगर कोई पार्टी बजरंबली के नाम से घृणा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।

अमर भारती
करण एक उम्मीद

बजरंग दल पर प्रतिबंध - कर्नाटक की सियासी जंग

विनाश काले विपरीत बुद्धि - बोध राज सीकरी

अमर भारती संवाददाता

गुरुग्राम। कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। 45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15% लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दुसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर

विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहाँ उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभनीय कार्य है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। आओ, स्वार्थी तत्वों को कर्नाटक के चुनाव में मजा चखाएँ और हार का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए।बोधराज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहां अगर कोई पार्टी बजरंबली के नाम से घृणा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।

RNI No. UPHIN/2013/53868

बुलंद खोज

सम्पादक-संजय सार्थक

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार-पत्र

बजरंग दल पर प्रतिबंध-कर्नाटक की सियासी जंग, विनाश काले विपरीत बुद्धि - बोध राज सीकरी

गुरुग्राम, बुलंद खोज / लोकेश कुमार। भाजपा प्रदेश कार्यसमिति के सदस्य, हरियाणा राज्य सीएसआर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष व पंजाबी बिरादरी महासंगठन के अध्यक्ष बोधराज सीकरी ने कांग्रेस द्वारा बजरंग दल के प्रतिबंध लगाए जाने के बयान पर कहा कि कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पीएफ़आई से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97 प्रतिशत हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं।

बोधराज सीकरी

45 प्रतिशत लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15 प्रतिशत लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35 प्रतिशत अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहाँ उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना है सीकरी ने कहा कि इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पीएफ़आई से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ़.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है। उन्होंने कहा कि बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अयोध्या में हुई थी जिसका काम शोभायात्रा की रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए विश्व हिंदू परिषद ने उनको कई और उत्तरदायित्व दिए। बजरंग दल धर्मांतरण को रोकता है और घुसपैठियों को रोकता है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभनीय कार्य है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। आओ, स्वार्थी तत्वों को कर्नाटक के चुनाव में मजा चखाएँ और हार का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए। बोधराज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहां अगर कोई पार्टी बजरंबली के नाम से घृणा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।

सबसे तेज... सबसे आगे

Postal No. : P/BWN/47/2023-2025
E-mail : haryanakiaawaz@gmail.com
www.haryanakiaawaz.in

हरियाणा की आवाज

भिवानी, चंडीगढ़, हिसार से एक साथ प्रकाशित

राष्ट्रवादी हिन्दी दैनिक

वर्ष : 14 अंक : 317 | भिवानी शनिवार 06 मई 2023 | मूल्य : 3.00 रूपये | कुल पृष्ठ : 8

8:33 AM

धर्मांतरण व घुसपैठियों को रोकता है बजरंग दल : बोधराज सीकरी

गुरुग्राम(राकेश)। हरियाणा सीएसआर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष बोधराज सीकरी ने कहा कि कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पीएफआई से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलंत उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97 प्रतिशत हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। सीकरी ने कहा कि 45 प्रतिशत लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15 प्रतिशत लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35 प्रतिशत अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज ङ्घी कृष्ण और शक्ति स्वरूपा मां में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंग बली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहां उन्हें बजरंग दल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना है।

इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पीएफआई से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहां पीएफआई कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है, वहीं बजरंग दल जोडने की प्रक्रिया में लगा है। बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अयोध्या में हुई थी, जिसका काम शोभा यात्रा की रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए विश्व हिंदू परिषद ने उनको कई और उत्तरदायित्व दिए। बजरंग दल धर्मांतरण को रोकता है और घुसपैठियों को रोकता है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभनीय कार्य है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे।

8:33 AM

नई दिल्ली, लखनऊ, रायपुर और फरीदाबाद से प्रकाशित

पायनियर

धर्मांतरण व घुसपैठियों को रोकता है बजरंग दल : बोधराज सीकरी

सर्वे में सिद्ध हुआ कि 97 प्रतिशत हिंदू भगवान में रखते हैं आस्था

बोधराज सीकरी।

गुरुग्राम। हरियाणा सीएसआर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष बोधराज सीकरी ने कहा कि कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पीएफआई से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलंत उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97 प्रतिशत हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं।

सीकरी ने कहा कि 45 प्रतिशत लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15 प्रतिशत लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35 प्रतिशत अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा मां में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंग बली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहां उन्हें बजरंग दल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना है। इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पीएफआई से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहां पीएफआई कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है, वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

3 म्हारा हरियाणा — मुख्यमंत्री ने तीर्थ दर्शन योजना का किया शुभारंभ
6 विचार क्रान्ति — गैस आधारित अर्थव्यवस्था के लिए युक्तिकरण और सुधार
8 हरियाणा — शराब कारोबारी के घर लूट मामले में सटिमों की छोटी जातें
10 फीचर — कोई नई फिल्म साइन नहीं कर रहे सलमान खान!
12 हरियाणा — जन्म दिवस पर 896 युवाओं को रोजगार का तोहफा दिया

पेज 11

राष्ट्रीय दैनिक

जगत क्रान्ति

वर्ष : 44 अंक : 124
जीन्द
शनिवार, 6 मई, 2023
पृष्ठ 12 | मूल्य ₹2

हरियाणा का सर्वमान्य लोकप्रिय हिन्दी दैनिक | E-paper : http://jagatkranti.co.in | E-mail: jagatkrantijind@gmail.com | जीन्द (हरियाणा) से प्रकाशित

कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा हताशा : बोध राज सीकरी

जगत क्रान्ति ⏭ एमके अरोड़ा

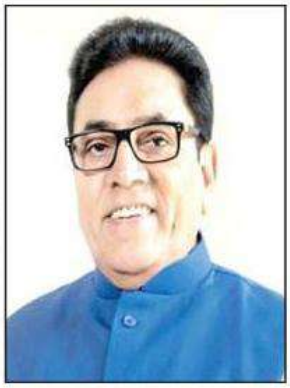

गुरुग्राम : भाजपा प्रदेश कार्य समिति के सदस्य, हरियाणा राज्य सीएसआर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष व पंजाबी बिरादरी महासंगठन के अध्यक्ष बोधराज सीकरी ने कांग्रेस द्वारा बजरंग दल के प्रतिबंध लगाए जाने के बयान पर कहा कि कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पीएफ़आई से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97 प्रतिशत हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। 45 प्रतिशत लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15 प्रतिशत लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35 प्रतिशत अनुयायी हैं।

इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहाँ उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या ख़तरा है। यह क्या विडम्बना है? सीकरी ने कहा कि इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पीएफ़आई से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ़.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

ज्योति दर्पण

हिन्दी दैनिक

Website : www.jyotidarpan.com

बजरंग दल पर प्रतिबंध-कर्नाटक की सियासी जंग

विनाश काले विपरीत बुद्धि-बोध राज सीकरी

गुरुग्राम। कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। 45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15% लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से हैं, वहाँ उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना है?

इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ. आई. से करना निम्न

स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है। बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अयोध्या में हुई थी जिसका काम शोभायात्रा की रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए विश्व हिंदू परिषद ने उनको कई और उत्तरदायित्व दिए। बजरंग दल धर्मांतरण को रोकता है और घुसपैठियों को रोकता है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभनीय कार्य है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। आओ, स्वार्थी तत्वों को कर्नाटक के चुनाव में मजा चखाएँ और हार का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए। बोधराज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहां अगर कोई पार्टी बजरंगबली के नाम से घृणा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच की हम कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।

बजरंग दल पर प्रतिबंध – कर्नाटक की सियासी जंग विनाश काले विपरीत बुद्धि – बोध राज सीकरी

गुरुग्राम (एनसीआर टाइम) गुरुग्राम कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97: हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। 45: लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15: लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम–भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35: अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग–अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहाँ उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या ख़तरा है। यह क्या विडम्बना है? इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ. आई. से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है। बजरंग दल की स्थापना 8–10–1984 में अयोध्या में हुई थी जिसका काम शोभायात्रा की रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए विश्व हिंदू परिषद ने उनको कई और उत्तरदायित्व दिए। बजरंग दल धर्मांतरण को रोकता है और घुसपैठियों को रोकता है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभनीय कार्य है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। आओ, स्वार्थी तत्वों को कर्नाटक के चुनाव में मजा चखाएँ और हार का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए।

बोधराज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहां अगर कोई पार्टी बजरंबली के नाम से घृणा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।

नये भारत का अखबार

गुड़गांव मेल

DAVP, Northern Rly., DIPR Haryana के विज्ञापनों के लिए अधिकृत हरियाणा के सभी जिलों, चण्डीगढ़ और दिल्ली में प्रसारित

बजरंग दल पर प्रतिबंध – कर्नाटक की सियासी जंग विनाश काले विपरीत बुद्धि : बोध राज सीकरी

ब्यूरो/गुड़गांव मेल

गुड़गांव, 5 मई। कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। 45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15% लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली

पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहाँ उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना है?

इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ. आई. से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अयोध्या में हुई थी जिसका काम शोभायात्रा की रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए विश्व हिंदू परिषद ने उनको कई और उत्तरदायित्व दिए। बजरंग दल धर्मांतरण को रोकता है और घुसपैठियों को रोकता है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभनीय कार्य है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। आओ, स्वार्थी तत्वों को कर्नाटक के चुनाव में मजा चखाएँ और हार का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए।

बोधराज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहां अगर कोई पार्टी बजरंबली के नाम से घृणा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।

Bharat Sarathi
A Complete News Website

गुरुग्राम

बजरंग दल पर प्रतिबंध – कर्नाटक की सियासी जंग .....विनाश काले विपरीत बुद्धि – बोध राज सीकरी

गुरुग्राम। कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिसमें यह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। 45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15% लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहाँ उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या ख़तरा है। यह क्या विडम्बना है?

इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ. आई. से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अयोध्या में हुई थी जिसका काम शोभायात्रा की रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए विश्व हिंदू परिषद ने उनको कई और उत्तरदायित्व दिए। बजरंग दल धर्मांतरण को रोकता है और घुसपैठियों को रोकता है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभनीय कार्य है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। आओ, स्वार्थी तत्वों को कर्नाटक के चुनाव में मज़ा चखाएँ और हार का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए।

बोधराज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहां अगर कोई पार्टी बजरंबली के नाम से घृणा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।

Viral Sach : Bodhraj Sikri – कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ़.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं।

45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15% लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिष्ठात योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं।

जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहाँ उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या ख़तरा है। यह क्या विडम्बना है?

इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ़. आई. से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ़.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अयोध्या में हुई थी जिसका काम शोभायात्रा की रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए विश्व हिंदू परिषद ने उनको कई और उत्तरदायित्व दिए। बजरंग दल धर्मांतरण को रोकता है और घुसपैठियों को रोकता है।

सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभनीय कार्य है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य है। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। आओ, स्वार्थी तत्वों को कर्नाटक के चुनाव में मजा चखाएँ और हार का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए।

बोधराज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहां अगर कोई पार्टी बजरंबली के नाम से घृणा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।